पढ़ने का सफ़र बनाम सक्रिय साक्षरता का सफ़र

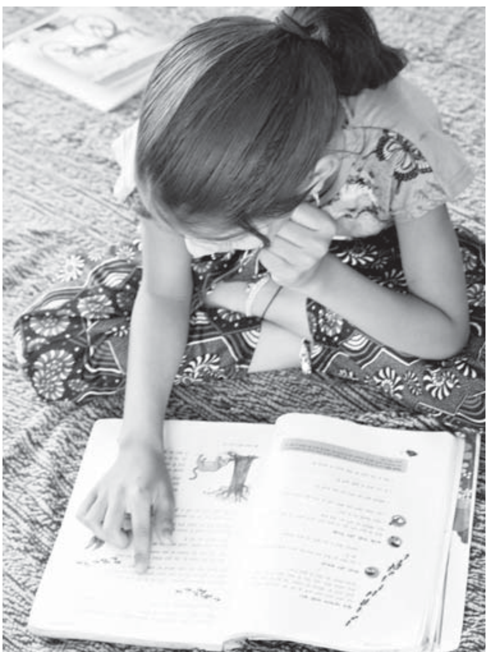
अनिल सिंह

साक्षरता और पाठक प्रतिक्रिया को लेकर विभिन्न विचार और सैद्धान्तिक व्याख्याएँ दी जाती रही हैं। किसी लिखित सामग्री को पढ़ते हुए अर्थ निर्माण की प्रक्रिया को पाठ (Text) और पाठक (Reader) दोनों के नज़रिए से देखा गया है। साक्षरता की समग्र और आधुनिकतम व्याख्या शिक्षाविद फ्रीबॉडी और ल्यूक के चार संसाधन मॉडल से की जाती है। इस आलेख में अनिल सिंह ने साक्षरता के इसी चार संसाधन मॉडल और इसमें पाठक की भूमिका की सैद्धान्तिक रूपरेखा प्रस्तुत की है। सं.

पढ़ने का सफ़र कहते ही हमारे सामने दो पात्र साफ़तौर से रहते हैं– एक तो पाठ और दूसरा पढ़ने वाला। पाठ के सहारे ही पढ़ने वाला यह सफ़र तय कर पाता है। पाठ एक साधन की तरह है पढ़ने वाले के लिए, जो न सिर्फ़ अपने भीतर उसे आने देता है बल्कि रुकने, ठहरने देता है और फिर कभी सुगम तो कभी हिचकोले लेते हुए उसे सफ़र में लेकर चल पड़ता है।

ये सफ़र किसी भी आम सफ़र से किस तरह अलग है इसे समझने के लिए हमें अपने पढ़ने के सफ़र के बारे में थोड़ा विचार करना होगा। हमारे चारों ओर मौखिक के साथ लिखित भाषा का संसार बिखरा पड़ा है। इन दोनों तरह के संसार का एक दूसरे से गहरा नाता है।

यहाँ हम पाठ सामग्री के बहाने लिखित भाषा संसार की बात को समझने की कोशिश करेंगे। लिखित भाषा या चित्रित सामग्री हमें अपनी तरफ़ खींच लेती है। एक पढ़ने वाला शायद ही उसकी अनदेखी कर पाए। लिखित को पढ़ पाना, उसे जान पाना मनुष्य की बड़ी उपलब्धियों में से एक है। इसलिए हम उसपर ठहरते हैं। मानवीय ज्ञान निर्माण की परम्परा और सामाजिक अभ्यास हमें वह विश्वास और उपकरण देते हैं कि लिखी हुई या चित्रित पाठ सामग्री को हम अपनी तरह से खोल सकते हैं, उससे गुज़र सकते हैं, आत्मसात कर सकते हैं और उसके पार जा सकते हैं। उससे प्रभावित या अप्रभावित रह सकते हैं, सहमत या असहमत हो सकते हैं, उसे चुनौती दे सकते हैं, उसपर सवाल उठा सकते हैं, उसे नई तरह से कहने, बोलने और पेश करने का उपक्रम कर सकते हैं।



इसका अर्थ यह है कि कोई पाठ सामग्री, पढ़ने वाले के भीतर तमाम स्तरों पर और तमाम तरह के उद्वेलन खड़े कर सकती है। इस प्रक्रिया में पाठ की ताक़त का अन्दाज़ा हमें मिलता है कि वह कुछ तरह की मनोसामाजिक प्रक्रियाएँ शुरू करने और पाठक को उकसाने का सामर्थ्य रखता है। लेकिन साथ ही हम यह समझने की भूल नहीं कर सकते कि यह सिर्फ़ पाठ की ही ताक़त का मसला है। पढ़ने वाला किसी कोरे सफ़र में नहीं निकला है। इस सफ़र के दौरान वह एक सक्रिय यात्री (पाठक) है और साधन (पाठ) के साथ बराबरी से अन्तर्क्रिया करता चलता है। अगर ऐसा न होता तो एक तरह की पाठ सामग्री को पढ़ने वाले अलग-अलग लोग उसे अलग-अलग तरह से न देखते-समझते।



साक्षरता को लेकर अभी तक की चरणबद्ध समझ हमें यहाँ तक पहुँचाती है। पूरेपन में और क्रियाशील या सक्रिय साक्षरता यही है जिसमें पढ़ने के सफ़र में पाठ (साधन) और पढ़ने वाले (यात्री) न सिर्फ़ एक दूसरे के पूरक हैं बल्कि उनके आपसी लेन-देन और परस्पर अन्तर्क्रिया से दुनियावी ज्ञान संसार का निर्माण भी होता चलता है।

एनसीएफ़ 2005 जिस रटन्त और यांत्रिक शिक्षा से आगे जाने का आह्वान करता है उसमें पहली बात यही है कि वह किसी पाठ को सिर्फ़ पढ़ पाने (डिकोड कर पाने) से कहीं आगे जाकर उसे अपने सन्दर्भ में जानने, समझने और इस्तेमाल कर पाने का कौशल दे। संसार की विविधता, विसंगतियों और इसके बीच अपनी स्थिति को समझने और उसकी पड़ताल कर पाने के मौक़े बनाए। किसी मत, समझ या विचार को चुनौती देने, सवाल करने और स्वीकारने या नकारने अथवा उसकी पुनर्व्याख्या की आज़ादी और उदारता दे।

यह शिक्षक / फेसिलिटेटर के दायरे में आने वाली ज़िम्मेदारी है कि वह अपने विद्यार्थी को पाठ के साथ इस सफ़र में निकल जाने के मौक़े निकाले, उसकी राह बनाए, और जहाँ सम्भव हो उसके साथ ख़ुद भी सफ़र करे।

पढ़ने-पढ़ाने की तमाम विधियों में पढ़ने के तकनीकी कौशल और अर्थ निर्माण के बीच एक द्वन्द्व बना रहता है। पढ़ पाने को सीमित अर्थों में देखे जाने के कारण यह द्वन्द्व और भी गहरा जाता है। पढ़ने की तकनीकी जटिलता में उलझकर अर्थ निर्माण और अर्थ विश्लेषण की अहम प्रक्रियाएँ न सिर्फ़ शिथिल पड़ जाती हैं बल्कि कुन्द भी होती जाती हैं। इसलिए पढ़ने के कौशल की वांछनीयता को स्वीकारते हुए हम पढ़ने के सफ़र को सुगम, आनन्ददायी, अर्थपूर्ण और समग्र कैसे बना सकें, इसपर सचेत और संवेदनशील ढंग से सोचने की ज़रूरत रही आती है।

शुरुआती पठन-पाठन के सफ़र में ही यह इसलिए भी ज़रूरी हो जाता है कि अगर पढ़ना सीखने के दौरान ही बच्चों में पाठ से एंगेज होने का यह अभ्यास बन जाए तो वह कौशल उम्रभर का हो जाता है। पाठ के साथ इस सक्रिय जुड़ाव को समय-समय पर अलग-अलग विद्वानों ने पहचाना और रेखांकित किया है। स्विट्ज़रलैंड की भाषा वैज्ञानिक डेनिस वॉन स्टॉकर, पढ़ पाने को सिर्फ़ अक्षरों को जानने-समझने से कहीं आगे दुनिया को पढ़ने और जानने-समझने तक विस्तृत करके देखती हैं। बच्चे उन अक्षरों को पढ़ते, अर्थ बनाते दरअसल अपनी आसपास की दुनिया को समझते जाते हैं। अपने निजी और सामाजिक अनुभवों के बूते वो इस काम को स्वाभाविक रूप से अंजाम देते हैं। एक वयस्क के रूप में हमारी भूमिका पाठ के साथ बच्चे की अन्तर्क्रिया को इनिशिएट करने और फिर लगातार उसे फेसिलिटेट करते जाने की है।

अमरीकन शिक्षाविद लुईस रोजेनब्लॉट (1938) ने पाठक-केन्द्रित विचार देते हुए कहा कि कोई उपन्यास, कहानी या कविता तब तक काग़ज़ में फैली स्याही से ज़्यादा कुछ नहीं है जब तक कि कोई पाठक उन्हें पढ़कर एक अर्थ नहीं देता। उन्होंने इस नज़रिए से पाठक के सिरे पर होने वाली अन्तर्क्रिया और अर्थ निर्माण को महत्त्वपूर्ण माना है। पाठक एक लगभग अनुपस्थित और अनजान लेखक के पाठ को अपनी तरह से गढ़ता और रचता है। उसके तमाम अर्थ बनाता है, तमाम परतें खोलता है, अलग-अलग तरह से देखता और समझता है। रोजेनब्लॉट के इस सिद्धान्त को रीडर रेस्पोंस थ्योरी 'Reader Response Theory' कहा जाता है। साहित्य में रसबोध और समालोचना इसी दायरे में आती हैं।

पढ़ने के सफ़र में जो सबसे आधुनिक और समग्र विचार है वह 1990 में ऑस्ट्रेलियन शिक्षाविद पीटर फ्रीबॉडी और एलेन ल्यूक का दिया हुआ है जिसमें वह पढ़ने के इस सफ़र को चार संसाधनों में देखते हैं। इस वजह से इस सिद्धान्त को 'साक्षरता का चार संसाधन मॉडल' (Four Resources Model of Literacy) भी कहते हैं। जिन बातों की चर्चा अभी ऊपर हमने की, उन्हीं बातों को एक सैद्धान्तिक ढाँचे में रखकर पीटर फ्रीबॉडी और एलेन ल्यूक ने साक्षरता और उसकी पद्धतियों को लेकर हमारी अब तक की समझ को एक तार्किक और व्यवहारिक आधार दिया है। उनके अनुसार, किसी पाठ सामग्री से एंगेज करते हुए पढ़ने वाला, साक्षरता की अलग-अलग अवस्थाओं में चार तरह की भूमिका में होता है।

पहली भूमिका (टेक्स्ट डिकोडिंग– Text Decoding)

प्रारम्भिक भूमिका है अक्षरों को जोड़-जोड़कर जमाना एवं टुकड़े-टुकड़े में शब्दों को लगाना है, उनकी ध्वनियों और उच्चारण के साथ चलना पर साथ ही साथ वाक्य की बढ़ती हुई संरचना को भी निभाते चलना। विराम चिह्नों को पहचानना। किस अक्षर पर ज़ोर है, कहाँ रुकना है, दो शब्दों के बीच के अवकाश का सम्मान करना, वाक्य कहाँ पूरा हो रहा है उसे समझना और उसके विन्यास को एक लय देना। साक्षरता की यह अपेक्षाकृत मूर्त अवस्था है। इसे डिकोडिंग भी कहा गया है। नए और कठिन शब्दों के अर्थ तलाशना, देशज या अन्य भाषाओं से आए शब्दों के अर्थ लगाना, यह सब इस भूमिका में होता है। बच्चे अकसर राह चलते दुकानों पर लगे साइन बोर्ड, शहरों या गलियों के नाम, विज्ञापन के स्लोगन, आदि पढ़ने की कोशिश लगातार करते रहते हैं। कविताओं के पोस्टर या कहानी की किताब से इसी तरह एंगेज होना शुरू करते हैं। यह आमतौर पर मौखिक भाषा के सहारे-सहारे चलता है। इसमें उसकी वर्तनी और विन्यास के व्याकरण का भी पालन करते जाना होता है। यह भी देख और कर पाना इसमें शामिल है कि अमुक वाक्य को दूसरी तरह भी जमाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, 'बिल्ली रोज़ दूध पीने आती थी' को दो अन्य तरह से जमाया जा सकता है– 'बिल्ली रोज़ आती थी दूध पीने' और 'बिल्ली दूध पीने रोज़ आती थी'। यह भाषा के स्वरूप और स्वभाव से आता है। हमारे सुने हुए अनुभवों से आता है।

इस भूमिका में इस स्तर पर, पढ़ने वाला, पाठ वस्तु में निहित तथ्यों और सूचनाओं को उस भाषा रूप में पहचान पाता है। अगले स्तर पर वह एक वाक्य में विभिन्न उप-वाक्यों की जटिलता को भी समझ पाता है। एक वाक्य दूसरे वाक्य से किस तरह भिन्न है, वाक्य में शब्दों का दुहराव कैसा है, एक वाक्य दूसरे वाक्य पर किस तरह निर्भर है या किस तरह उसी का विस्तार है। पढ़ने वाला पलट-पलट कर दुबारा पढ़ता है और उसकी पुष्टि करता चलता है कि वह जो पढ़ रहा है वह ठीक है या नहीं? क्या ठीक होगा? हिज्जे करके पढ़ना, ग़लत पढ़ जाने पर स्व-बोध से किसी शब्द को दुबारा पढ़ना, या पूरे वाक्य को फिर से पढ़कर विन्यास के आधार पर सुधार करते हुए पढ़ना इसी भूमिका में होता है।

दूसरी भूमिका (पाठ सहभागी या अर्थ गढ़ना– Text Participant or Meaning Making)

एक अगली भूमिका में पढ़ने वाला, पाठ का अर्थ गढ़ता है, उसे समझता है और ख़ुद

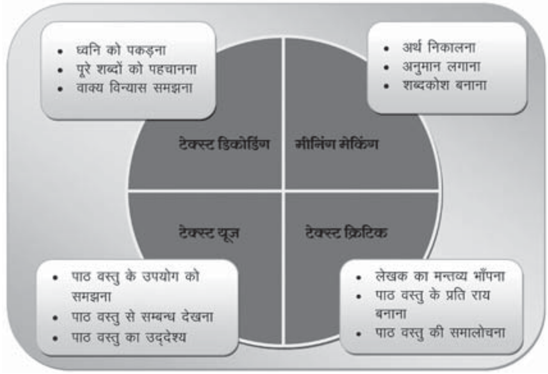
से उसका जुड़ाव देखता है। संस्कृति, परिवार-समुदाय और देश-काल के आधार पर उस पाठ वस्तु को समझने का जो भी सिस्टम है, उसके अनुसार पाठ वस्तु को समझता और उसके साथ जोड़ बिठाता है। यह अमूर्तता की तरफ़ साक्षरता का पहला क़दम है। पढ़ने वाला पहले उसका शाब्दिक अर्थ समझता है और फिर एक क़दम आगे बढ़कर वह उसका निहित और गूढ़ अर्थ समझता है। साक्षरता के इस संसाधन या कौशल को पाठ सहभागिता या अर्थ गढ़ना कहते हैं। पाठ समझने में वह अपनी पिछली जानकारी और समझ का उपयोग करता है। वह टटोलता है कि इस तरह की पाठ वस्तु को समझने में उसका पूर्व ज्ञान या समझदारी क्या कहते हैं। इस भूमिका / अवस्था में पढ़ने वाला, उन जानकारियों, विचार और घटनाओं को चुनता है जो उसके जीवन से जुड़ाव रखते हैं। पाठ वस्तु को पढ़ते समय वह इस बात से संचालित होता है कि क्या अर्थपूर्ण है, किस चीज़ से अर्थपूर्णता बन रही है या क्या मायने रखता है।

उदाहरण के लिए, 'आज फिर घर में चूल्हा नहीं जला' का एक शाब्दिक अर्थ है, जिसमें आज एक शब्द है, घर एक शब्द है, चूल्हा एक शब्द है और जलना एक शब्द है। ये चारों शब्द जीवन से जुड़े शब्द हैं, और इनसे बनने वाला यह पूरा वाक्य भी जीवन से जुड़ाव रखता है। लेकिन इन शाब्दिक अर्थों से इतर उसका एक गहरा, निजी और सामाजिक सन्दर्भ में निहितार्थ है, गूढ़ अर्थ है। 'चूल्हे का नहीं जल पाना' एक बेबसी की तरफ़ इशारा करता है, जिसमें अभाव, वंचना और पीड़ा का भाव समाहित है। 'आज फिर' उसे एक स्तर की गम्भीरता से भर देता है। साक्षरता की यह अमूर्तता एक ऐसा कौशल है जो पढ़ने वाले को पाठ वस्तु के साथ एंगेज होने के लिए जीवन का एक पूरा सन्दर्भ देता है। उसके अनुभवों को कुरेदता है, चेतना को जागृत करता है और किसी पाठ वस्तु के गहरे सरोकार को पकड़ पाने के लिए प्रेरित करता है। इस दौरान भी पाठ वस्तु से संकेतों को लेकर अपनी प्रतिक्रिया और अहसास को पुष्ट करने का लेन-देन चलता रहता है। कई बार छोटे-छोटे उपवाक्यों को व्यवस्थित, नियमानुसार और विराम चिह्नों के साथ प्रवाह से पढ़ने पर अर्थ बन पाता है। पढ़ने वाला तरह-तरह से इसे आज़माकर अपना अर्थ बनाता है।

तीसरी भूमिका (पाठ सामग्री उपयोगकर्ता—Text User)

तीसरी भूमिका में, पढ़ने वाला उस पाठ वस्तु को उपयोग करने की नज़र या उद्देश्य से पढ़ता है। साक्षरता का यह अपेक्षाकृत अधिक क्रियात्मक कौशल है। साक्षरता के इस संसाधन को पाठ प्रयोग भी कहते हैं। किसी पाठ को पढ़ते हुए उसकी उपयोगिता के बारे में विचार करते चलना। पढ़ने के साथ ही यह तय करते जाना कि पाठ वस्तु के इर्द-गिर्द उसका सामाजिक सम्बन्ध क्या है? यह किसके लिए है? इसका क्या उपयोग किया जा सकता है? साथ ही यह समझ पाना कि सांस्कृतिक और सामाजिक दायरों में पाठ वस्तु अलग-अलग होती है। यह भी समझना कि पाठ वस्तु का कहन, उसका सुर, तीव्रता और वाक्य अवयवों का क्रम अलग-अलग सन्दर्भों में अलग-अलग हो सकता है। पढ़ने वाला इस अवस्था में पाठ वस्तु के उन तत्त्वों को पहचान पाता है जो किसी विशिष्ट उद्देश्य से उसमें शामिल किए गए हैं।

पढ़ने वाला उद्देश्य और सन्दर्भ के अनुसार अलग-अलग पाठ वस्तु की संरचना की समझ रखता है। उदाहरण के लिए, किसी विज्ञापन की पाठ वस्तु को पढ़ते हुए पढ़ने वाला स्वयं को तत्काल एक सम्भावित क्रेता की तरह देखने लगता है, और पाठ वस्तु से उसी तरह एंगेज करता है। वह इस पाठ वस्तु से किसी और उद्देश्य को पूरा करने की अपेक्षा भी नहीं रखता। किसी व्यंजन की विधि को पढ़ते हुए उसकी उपयोगिता को तत्काल रेखांकित किया जा सकता है। या किसी कहानी को पढ़ते हुए उसके किसी ख़ास हिस्से को एक ख़ास उद्देश्य से इस्तेमाल करने के बारे में विचार कर पाना इसी तरह का कौशल है। जब हम कोई चुटकुला पढ़ रहे होते हैं तो मनोरंजन का उसका उद्देश्य हमारे सामने बिलकुल स्पष्ट



होता है। उसके साथ एंगेज करते समय पढ़ने वाला उसके निहायत इसी पहलू को देख रहा होता है। किसी पाठ वस्तु को पढ़ते हुए उससे बाहर निकलकर, उसके उपयोग पर नज़र टिकाने का कौशल, साक्षरता का ऐसा कौशल है जिसे जीवन कौशल भी कहा जा सकता है। इस कौशल से साक्षरता के उद्‌देश्य को एक स्तर की पूर्णता मिलती है। इसमें पाठ वस्तु से जीवन की ओर और जीवन से पाठ वस्तु की ओर आना-जाना चलता रहता है। स्कूली शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों को पढ़ते हुए अकसर अपने उत्तर की तलाश या किसी बात की व्याख्या का उद्‌देश्य लेकर बच्चे उसकी पाठ वस्तु के साथ इसी तरह एंगेज करते हैं। जब हम पढ़ भी रहे होते हैं और अपने काम की, उपयोग की चीज़ें निकालते और छाँटते भी जाते हैं। किसी पात्र का चरित्र या व्यक्तित्व समझने के लिए कहानी या उपन्यास को पढ़ना इसी भूमिका के अन्तर्गत होता है।

चौथी भूमिका (पाठ वस्तु समालोचना— Text Analyst)

चौथा कौशल साक्षरता का एक उच्च स्तरीय और चेतनाशीलता का कौशल है। यह अपेक्षाकृत एक उच्चतम क्रियाशीलता का कौशल है जिसमें पढ़ने वाला पाठ से एंगेज करते हुए उससे विलग होकर भी उसे देखता है। वह पाठ वस्तु पर समालोचनात्मक नज़र डालता है और उसपर चिन्तन करता है। ऐसा करते हुए वह लेखक के बारे में भी सोच रहा होता है। वह यह देख रहा होता है कि कोई पाठ वस्तु किसी ख़ास मक़सद से तैयार की गई है। वह लेखक के ख़ास दृष्टिकोण को पकड़ पाता है। साक्षरता के इस संसाधन को पाठ समालोचना कहते हैं। पढ़ने वाला इस स्तर पर समझ रहा होता है कि पाठ वस्तु तटस्थ या निरपेक्ष नहीं होती है, वह किसी ख़ास नज़रिए, मत या इशारे को पेश करती है। पढ़ने वाला उस आधार पर अपनी पोजीशन या अपना स्टैंड तय करता है। वह यह भी समझ पाता है कि लिखने वाला क्या सोचता है, उसका क्या विचार या मत है।

पढ़ने वाला अपने सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों, रुचियों और नज़रिए के अनुसार पाठ वस्तु को बार-बार खँगालता है और उसके सामने खड़े होकर कई बार उसे चुनौती भी देता है, उसपर सवाल खड़े करता है। पाठ वस्तु के साथ पढ़ने वाले का संघर्ष होता है, और इसीलिए इस स्तर पर कोई पाठ वस्तु पढ़ने वालों पर अलग-अलग असर डालती है। किसी कहानी के अन्त को अपनी तरह से सोचने, बदलने और अपनी पसन्द के अनुसार ढालने का प्रयास इसी कौशल से आता है। किसी आलेख में निहित कोई सांस्कृतिक मूल्य या राजनीतिक विचार, एक पढ़ने वाले को वहाँ पर रोककर उसकी पड़ताल करने को उकसाता है।

पढ़ने वाला इस चेतना के बूते उस पाठ वस्तु की संरचना या विन्यास अथवा उसमें निहित विमर्श को चुनौती दे सकता है, उसपर प्रश्न उठा सकता है, उसकी समीक्षा और पुनर्लेखन कर सकता है। इस तरह हम देख पाते हैं कि पढ़ने वाला इन चारों भूमिकाओं में चार संसाधनों का इस्तेमाल करता है और साक्षरता के समग्र लक्ष्य को प्राप्त करता है। यहाँ हमें यह समझने की भूल नहीं करनी चाहिए कि पढ़ते समय पाठक एक बार में किसी एक भूमिका या कौशल का इस्तेमाल कर रहा होता है। और न ही यह कि साक्षरता के इन चार संसाधनों के इस्तेमाल की कोई रेखीय प्रक्रिया है। एक पाठक अलग-अलग समयों पर दो या दो से ज़्यादा कौशलों का इस्तेमाल भी कर रहा हो सकता है। कई बार

पाठ को पढ़ते हुए उसे समझने का संघर्ष और उसमें निहित दृष्टिकोण को पकड़ना साथ-साथ हो सकता है। उसी दौरान उसके उपयोग का बोध भी हो सकता है।

कक्षा में बच्चों के साथ हम साक्षरता के इन चारों संसाधनों का ध्यान रखते हुए पाठक को उसकी चारों भूमिकाओं में कुशल बना सकते हैं। किसी पाठ सामग्री को पढ़ते हुए उसमें आए कठिन शब्दों या दूसरी भाषा के शब्दों के अर्थ पर बात करना एवं स्थानीय और देशज शब्दों की रचना पर बात करना इसका पहला चरण हो सकता है। पाठ वस्तु के साथ शुरुआती जुड़ाव इसी तरह बनता है। पाठ वस्तु को पढ़कर इससे मिलता-जुलता क्या कुछ याद आ रहा है या ये बात किस बात से जुड़ रही है, कोई पात्र या घटना से किसी और बात का जुड़ाव मिलना; इन बातों को कुरेदा जा सकता है। इससे पाठ वस्तु सिर्फ़ एक कोरी शब्द रचना न होकर जीवन्त अनुभव हो जाती है, यह जुड़ाव का एक और स्तर है। हम यह अभ्यास करा सकते हैं कि पाठ वस्तु से क्या-क्या सूचनाएँ मिल रही हैं, पाठ वस्तु क्या-क्या बता रही है, एवं किसी पात्र, घटना या कालखण्ड के बारे में क्या-क्या बातें हमारी समझ और जानकारी को बढ़ा रही हैं। इस पाठ वस्तु का क्या इस्तेमाल किया जा सकता है, यह अभ्यास भी बच्चों के साथ काम करने से पुख़्ता होता है। किसी पाठ वस्तु में क्या मूल्य, मान्यताएँ और मत निहित हैं, इन्हें पकड़ना भी एक अभ्यास की माँग करता है। पाठ वस्तु को पढ़कर आपका क्या नज़रिया बना, नज़रिए में क्या कोई बदलाव आया, और सहमति-असहमति की दृष्टि भी टटोली जा सकती है। किसी पाठ सामग्री को अपनी तरह से बदलकर फिर से लिखने या प्रस्तुत करने जैसा अभ्यास कराकर बच्चों को सक्रिय साक्षरता के एक और पायदान तक पहुँचाया जा सकता है।

इस तरह ये चारों संसाधन एक दूसरे के काफ़ी नज़दीक और कई बार आपस में गुँथे हुए भी हैं। वास्तविक और समग्र साक्षरता के लिए इन चारों संसाधनों का समावेशन अनिवार्य है। बच्चे इन संसाधनों के साथ अलग-अलग भूमिकाओं में पाठ के साथ अन्तर्क्रिया करें, इसके लिए ज़रूरी है कि एक वयस्क भूमिका में हम शिक्षक, बच्चों के साथ साक्षरता पर काम करते हुए इसके 'पढ़-लिख पाने' जैसे सीमित अर्थों से आगे जाकर इसे एक सामाजिक व्यवहार के रूप में देख पाएँ। बच्चों को इन चारों कौशलों का अभ्यास करा पाएँ। अब जब हम किसी पाठ वस्तु से एंगेज हों तो हम ख़ुद भी अहसास करें कि ये चारों कौशल पढ़ने की इस प्रक्रिया में किस तरह काम करते हैं।

सन्दर्भ

फर्दर नोट्स ऑन द फोर रेसोर्सेस मॉडल, एलेन ल्यूक एंड पीटर फ्रीबॉडी

लिटरेसी टीचिंग टूल किट— फोर रेसोर्सेस मॉडल फॉर रीडिंग एंड व्युइंग

बाल साहित्य के ज़रिए प्रारम्भिक भाषा एवं साक्षरता को सींचना, शैलजा मेनन (*पराग,* एलईसी 2020, कोर्स बुक–1)

साक्षरता के चार संसाधन मॉडल का परिचय, सुजाता नरोन्हा द्वारा संकलित 2016 (*पराग,* एलईसी 2017, कोर्स बुक–2)

अनिल सिंह पिछले ढाई दशक से विभिन्न स्वैच्छिक संस्थाओं के साथ मिलकर सामाजिक विकास के कार्य में संलग्न रहे हैं। 15 सालों से प्रारम्भिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं। जन संचार, समाज कार्य एवं शिक्षा शास्त्र की पढ़ाई की। वर्तमान में टाटा ट्रस्ट, पराग इनिशिएटिव के लाइब्रेरी एजुकेटर कोर्स में बतौर फ़ैकल्टी जुड़े हुए हैं।

सम्पर्क : bihuanandanil@gmail.com